ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एनो मा नि गाम्। अथर्व. 5/3/4
हे प्रभो! मैं पापी न बनं।
O God! I should never become a sinner.

वर्ष 37, अंक 29 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 जून, 2014 से रविवार 6 जुलाई, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शल्क : 250 रुपये पष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन सम्पन्न

महाशय धर्मपाल जी सर्वसम्मति से पुनः प्रधान निर्वाचित

आप मझे ऐसा आशीर्वाद दें कि आर्यसमाज का कार्य और अधिक गति से करता रहं – महाशय धर्मपाल

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यसंस्थाओं की केन्दीकृत संस्था आर्य केन्दीय सभा (दिल्ली राज्य) का साधारण अधिवेशन एवं निर्वाचन रविवार दिनांक 29 जून, 2014 को आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन का शुभारम्भ गुरुकुल रानी बाग के ब्रह्मचारियों द्वारा स्वस्तिवाचन मन्त्रों के साथ हुआ।

अधिवेशन की कार्यवाही आरम्भ करते हुए सर्वप्रथम महामन्त्री श्री राजीव आर्य जी ने सदन के समक्ष गत तीन वर्षों के कार्य विवरण को पढ़कर सुनाया। विवरण की प्रतियां समस्त प्रतिनिधियों को प्रवेश द्वार पर ही दे गई थीं।

श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी ने गत वर्षों का आय-व्यय प्रस्तुत किया, जो कि वार्षिक विवरण में भी प्रकाशित किया गया था। उपस्थित सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से विवरण को पारित किया। वार्षिक विवरण के पारित होने पर महाशय धर्मपाल जी ने समस्त प्रतिनिधियों का धन्यवाद करते हुए आगे की कार्यवाही के लिए महामन्त्री श्री राजीव आर्य से निवेदन किया। श्री राजीव आर्य जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी को निर्वाचन अधिकारी के रूप में आमन्त्रित किया।

महाशय जी ने की आर्य केन्दीय सभा दिल्ली राज्य हेतु 21 लाख रुपये की स्थिर निधि स्थापित करने की घोषणा

पनः प्रधान निर्वाचित होने पर आर्य प्रतिनिधियों का धन्यवाद व्यक्त करते महाशय जी

सैकड़ों प्रतिनिधियों की उपस्थिति मे गरिमामय भावपर्ण माहौल में हुआ निर्वाचन

निर्वाचन अधिकारी ब्र. राजसिंह आर्य जी ने निर्वाचन की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए आर्य केन्दीय सभा दिल्ली के प्रधान पद के लिए नाम प्रस्तुत करने के लिए उपस्थित प्रतिनिधियों से निवेदन किया।

समस्त प्रतिनिधियों ने हाथ उठाकर

आर्यसमाज के वर्तमान एवं भविष्य के कार्यों एवं योजनाओं पर हई चर्चा

महाशय धर्मपाल जी का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन सैंकड़ो प्रतिनिधियों ने हाथ उठाकर किया जिसमें सर्वश्री शिव कुमार मदान, अरुण

– शेष पृष्ठ 4 पर

अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन

महाशय धर्मपाल जी द्वारा किए गए समाजोपयोगी कार्यों एवं आर्यसमाज के उत्थान हेतु आरम्भ की गई योजनाओं को समाहित करते हुए उनके जीवन, व्यक्तित्व एवं उनके कार्यों के सम्बन्ध में एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। समस्त महानुभावों से निवेदन है कि उनके सम्बन्ध में संस्मरण, यादगार घटनाक्रम, चित्र, विचार आदि यथाशीघ्र लिखकर भेजने की कृपा करें।

– संयोजक, अभिनन्दन ग्रन्थ समिति
15- हनमान रोड, नई दिल्ली-1
Email : aryasabha@yahoo.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के अन्तर्गत

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसन्धान केन्द्र कालीकट (केरल)

विराट् यज्ञ एवं शिलान्यास समारोह : 15 अगस्त, 2014 (शुक्रवार)

यज्ञ : प्रातः 10:30 बजे शिलान्यास : 11:30 बजे (महाशय धर्मपाल जी)

आप सब अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर दक्षिण भारत में स्थापित होने वाले इस बहु-उद्देशीय अनुसंधान केन्द्र के शिलान्यास समारोह के साक्षी बनें। आपके वहां रहने एवं भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से की जाएगी। जो आर्यजन समारोह में सम्मिलित होना चाहें वे तत्काल अपना रेलवे/हवाई आरक्षण करा लेवें तथा मो. 9958174441 पर सचना दें ताकि आपके लिए समचित व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

आचार्य बलदेव	प्रकाश आर्य	ब्र. राजसिंह आर्य	विनय आर्य	धर्मपाल आर्य	आचार्य एम. आर. राजेश	विवेक शिनॉय
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री	व. उप प्रधान	अध्यक्ष	संयोजक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा			कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट	

वेद-स्वाध्याय

दुःख विनाशक परमात्मा

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

बृहस्पतिर्नयत दुर्गहा तिरः पुनर्नेषदघशंसाय मन्म। क्षिपदशस्तिमप दुर्मतिं हन्नथा करद्यजमानाय शं योः।। ऋ. 10/182/2

अर्थ—(**बृहस्पतिः**) ब्रह्माण्ड का स्वामी परमात्मा (**दुर्गहा**) दुःखों बाधाओं को नष्ट करने वाला है [वह मुझे] (**तिरः नयतु**) बाधाओं के बीच से चीरते हुये पार ले जाये (**पुनः**) और वह (**अघशंसाय**) पाप का परामर्श देने वाले के लिये (**मन्म**) ज्ञान सद्बुद्धि (**नेषत्**) प्रदान करे (**अशस्तिम्**) दुर्भावना, निन्दा को (**क्षिपत्**) दूर करे (**दुर्मतिम्**) दुर्बुद्धि को (**अपहन्**) नष्ट करे (**अथ**) और (**यज्ञमानाय**) आत्म समर्पण करने वाले यजमान के विघ्नों का (**शंयोः**) शमन, निवारण (**करत्**) करे।

जिससे पीड़ित होकर प्राणी उससे दूर रहना चाहता है अथवा उसके कारण को दूर हटाने की चेष्टा करता है, उसका नाम दुःख है।'सांख्य-दर्शन' में तीन प्रकार के दुःख बतलाये हैं जिनको दूर करने के लिये अत्यन्त पुरुषार्थ करना अपेक्षित है।

1. **आध्यात्मिक**—जो अपने आन्तरिक कारणों से उत्पन्न होता है। उसका नाम 'आध्यात्मिक दुःख' है। इसके दो भेद हैं। शरीर के वात-पित्त-कफ दोषों के प्रकुपित होने और आहार-विहार की विषमता से उत्पन्न रोगादि शारीरिक दुःख तथा काम, क्रोध, राग-द्वेषात्मक मानसिक दुःख जानना चाहिये।

2. **जो दुःख दूसरे प्राणियों**—सर्प, बिच्छू, सिंह, व्याघ्र एवं चोर-डाकू से प्राप्त होता है उसे आधिभौतिक दुःख कहते हैं।

3. सर्दी, गरमी, वर्षा, धूप, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प आदि उत्पातों से उत्पन्न होने वाले दुःख को आधिदैविक दुःख कहते हैं।

आधुनिक विज्ञान ने बहुत सीमा तक इन तीनों दुःखों से छूटने के संसाधन जुटायें हैं परन्तु दुःख का कारण तो अपने भीतर अविद्या, अविवेक की गांठें बांधे भीतर ही स्थित है। इसलिये दृष्ट साधनों से इन दुःखों का पूर्णतः निवारण नहीं किया जाता जब तक इनके मूल को नष्ट न किया जाये।

'श्वेताश्वतर उपनिषद्' कहती है—

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः। तदा ब्रह्मणोऽविज्ञाय नरः सुखी भविष्यति॥ श्वेता0 6.20॥

जब आकाश को चटाई की भाँति लपेटा जा सकेगा तब बिना आत्मा-परमात्मा को जाने भी मनुष्य सुखी हो सकेगा। परमात्मा ही सच्चा वैद्य है जो घनघोर कष्टों में भी हमारा साथ नहीं छोड़ता। मन्त्र कहता है **बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा तिरः** सारे ब्रह्माण्ड का स्वामी परमात्मा ही दुःखों और बाधाओं का निवारण करने वाला है। वही मेरी भवसागर में फंसी नाव को निकालकर किनारे लगायेगा। हे मनुष्यो! आओ उसकी भक्ति करें और गायें—

साचा बस एक प्रभु का नाम।
मन रे जपले तू सुबह और शाम॥
वह अमृत का सच्चा सागर
क्यों भटके तू प्यासा।
उस अमृत से प्यास बुझाले
दूर हो तेरी निराशा॥
शरण में आकर सर को झुकाकर
कर उसको प्रणाम॥ 1॥
हर मुश्किल में वो ही आकर
सबको धीर बंधाता।
भंवर में अटकी इस नैया को
वो ही पार लगाता॥
संकट रूपी इस नैया को
पल में लेता थाम॥ 2॥
वो घट-घट का जानन हारा
वो ही पालन हारा।
हर निर्बल और दीन दुःखी का
वो है एक सहारा॥
वो है प्रेम का भूखा प्यारे
मांगे न कोई दाम॥ 3॥

न केवल वह मुझे सन्मार्ग दिखा विघ्न-बाधाओं से पार करे अपितु **पुनर्नेषत् अघशंसाय मन्म** जो सीधे-सादे लोगों को भ्रमित कर उन्हें पाप पंक में धकेल रहे हैं, उन्हें भी सद्बुद्धि प्रदान करे। वे स्वयं तो इस कीचड़ में फंसे हैं और दूसरों को भी इसमें आने की प्रेरणा दे रहे हैं। वे धन की प्राप्ति, दुःखों का निवारण करने के लिये जादू-टोना, अभीष्ट देवी-देवता का कृपापात्र, ग्रहों का निवारण, परिवार पर आये संकट के लिये अनुष्ठान, बलि, हवन, पुरश्चरण आदि अनेक विध जाल फैलाकर भोले लोगों को बहकाते हैं। हे परमेश्वर! उनको सद्बुद्धि दीजिये।

क्षिपदशस्तिम् दुर्मतिं हन्=हे परमात्मन्! आप न केवल मेरे विघ्नों का निवारण अपितु जिनके कारण मैं इन पापकर्मों में प्रवृत्त हो दुःखों के जाल में हर बार फंस जाता हूँ उस दुर्भावना और दुर्बुद्धि को दूर कीजिये। क्योंकि दुःखों का कारण यह मेरी दुर्बुद्धि ही है जो अनित्य पदार्थों को नित्य मान उन्हीं में आसक्त हो रही है। अपवित्र, अस्थि-चर्म-रुधिर-मल-मूत्र के बने इस शरीर को ही पवित्र मान उसी में विषय-सुख की कामना कर रही है तथा स्वार्थ के वशीभूत हो सज्जन और धार्मिक लोगों पर भी दोषारोपण कर रही है। आँखों पर जैसा चश्मा चढ़ा हो, संसार की सभी वस्तुयें उसी रंग की दिखाई देती हैं। जब चश्मे का रंग स्वच्छ, निर्मल कांच का हो तब यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होता है। **धियो यो नः प्रयोदयात्** हमारी बुद्धि को उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव में प्रेरित कीजिये। जिस मेधा बुद्धि की कामना विद्वान् और पालन करने वाले पितर लोग करते हैं, उस मेधा बुद्धि को मुझे दीजिये जिसे पाकर मैं सभी को मित्र की दृष्टि और समभाव से देखने में समर्थ हो जाऊँ।

हे प्रभो! आप इस यजमान की झोली भर दीजिये **अथा करद् यजमानाय शंयोः** और इसे सुखी करने की कृपा कीजिये। हमें इस बात का ज्ञान है कि आपकी कृपा के बिना कोई कितना भी धन-धान्य से समृद्ध हो, सुख और आनन्द की प्राप्ति नहीं कर सकता। धन तो तुम पुरुषार्थ करने वालों को बिना मांगे ही दिये जा रहे हो। यह आपका अटल व्रत है परन्तु क्या सभी धनवान् सुखी हैं। शास्त्र कहते हैं—**न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः** (कठो0 1.27) मनुष्य की तृप्ति धन से नहीं हो सकती। सौ रुपये वाला सहस्रपति, सहस्र वाला लखपति और एक लाख वाला करोड़पति बनने का स्वप्न देखता है। धन की यह तृष्णा बढ़ती ही चली जाती है। व्यक्ति सुखोपभोग, ऐश्वर्य और आनन्द की प्राप्ति के लिये ही धन का सञ्चय करता है। जब परमेश्वर के दर्शन हो उसे वास्तविक आनन्द की अनुभूति हो जाती है तब ये सांसारिक सुख के साधन तुच्छ लगने लगते हैं।

- *क्रमशः*

वेद मन्त्र भावार्थ
यजुर्वेद 32/6

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

पदार्थ (१):- (**येन**) जिस जगदीश्वर ने (उग्रा) तीक्ष्ण स्वभाव वाले या तीव्र तेज वाले (**द्यौः**) प्रकाशयुक्त सूर्यादि पदार्थ और (**पृथिवी**) भूमि (**दृढ़ा**) दृढ़ की है या धारण की है (**येन**) जिस जगदीश्वर ने (**स्वः**) सुख को (**स्तभितं**) धारण और (येन) जिसने (**नाकः**) सब दुःखों से रहित मोक्ष को धारण किया है (**यः**) जो (**अन्तरिक्षे**) मध्यवर्ती आकाश में वर्तमान (**रजसः**) सब लोक लोकान्तरों को (**विमानः**) विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस (**कस्मै**) सुखदायक (**देवाय**) कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (**हविषा**) सब सामर्थ्य से (**विधेम**) विशेष प्रेमभक्ति करें या सेवा करें।

(सं. वि.+ऋ. दया. कृत यजुर्वेदभाष्य)

भावार्थ :- ईश्वर मन्त्र द्वारा उपदेश देते हैं- हे मनुष्यों! जो समस्त जगत् का धर्त्ता, सब सुखों का दाता, मुक्ति का साधक, आकाश के तुल्य व्यापक परमेश्वर है उसी की भक्ति करो। (ऋ. दया. कृत यजुर्वेदभाष्य अ. 32/मं.6)

टिप्पणी :- (क) ईश्वर रचित सूर्य प्रति सैकण्ड जो ऊर्जा फैंकता है उसका दो अरबवाँ भाग ही पृथ्वी के हिस्से में आता है। यदि मानव इसका 10,000 वाँ भाग भी उपयोग में ले तब भी ऊर्जा की समस्या हल हो सकती है। इस ऊर्जा के उत्सर्जन में सूर्य प्रति सैकण्ड लगभग 40 टन वजन खो देता है ऐसा बताते हैं।

(ख) हमारी आकाश गंगा में कम से कम 10 अरब सूर्य हैं जिनमें से प्रत्येक सूर्य का भार हमारे सूर्य से अधिक है ऐसा बताते हैं। हमारी आकाशगंगा के समान अरबों आकाशगंगाएँ आकाश में है इनका रचयिता व धारक ईश्वर है।

(ग) पृथिवी का द्रव्यमान = दस अरब का 6600 अरब गना टन बताया जाता है।

(घ) ज्येष्ठा नक्षत्र का व्यास हमारे सूर्य से 450 गुना बताया जाता है। हमारे सूर्य जैसे 9 करोड़ सूर्य एक साथ मिलाये जाय तो ज्येष्ठा नक्षत्र बनेगा। 13 लाख पृथवियों को एक साथ मिलाने से सर्य बनता है।

(ङ.) विज्ञान ज्योतिषियों का कहना है कि एक खरब से ऊपर निहारिकाएँ या आकाशगंगाएँ तो हमने गिनी हैं।

(च) ईश्वर की व्यवस्था से पृथ्वी अपने ध्रुवीय अक्षों पर घूमते हुए 23° के कोण पर झुकी रहती है जिससे ऋतुओं में नियमितता आती है। पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमते रहने के कारण उसका बसने योग्य क्षेत्रफल दगना हो गया है ऐसा बताते हैं।

(छ) सर्य से बाहर निकलने वाली ज्वालाओं में सबसे बडी ज्वाला की लम्बाई 5.88 लाख किलोमीटर नापी गयी है।

(ज) पृथ्वी के चारों ओर गैसों का वायुमण्डल काफी ऊँचा (500 मील) व इतना घना है कि वह तीस मील प्रति सेकण्ड के हिसाब से प्रतिदिन गिरने वाले दो करोड़ उल्काओं के घातक प्रभाव से पृथ्वी को बचा लेता है। यह वायुमण्डल तापमान को ऐसी सीमा तक सीमित रखता है कि जिनमें प्राणी जीवित रह सकें। यह ईश्वरीय सुरक्षा व्यवस्था है। उल्काओं की सबसे भारी वृष्टि 16, 17 नवम्बर 1977 ई. की रात को देखने को मिली ऐसा बताया जाता है।

(स) ईश्वर पृथिवी व सूर्य का परिमाणकर्ता है। उनके आकार का निर्धारण ईश्वरकृत है। यदि पृथिवी का आकार इतना छोटा होता जितना चन्द्रमा का अर्थात् वर्तमान व्यास से उसका व्यास केवल एक चौथाई होता तो गुरुत्वाकर्षण शक्ति न वायुमण्डल को सम्भाल पाती न पानी को और तापमान भी इतना सीमातीत होता कि जीवन धारण करना कठिन हो जाता। यदि

- शेष पृष्ठ 8 पर

मैं आस्तिक क्यों हूँ?

एक नया नया फैशन चला है अपने आपको नास्तिक यानि कि atheist कहलाने का जिसका अर्थ है कि मैं ईश्वर की सत्ता, ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता। अलग अलग तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं जैसे अगर ईश्वर है तो दिखाई क्यों नहीं देते? अगर ईश्वर है तो किसी भी वैज्ञानिक प्रयोग के द्वारा सिद्ध क्यों नहीं होते? अगर ईश्वर हैं तो संसार में भूकम्प, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ क्यों आती हैं और ईश्वर उन्हें रोक क्यों नहीं लेते हैं? अगर ईश्वर हैं तो संसार में गरीबी, अत्याचार, बीमारी आदि क्यों है? किसी ने ईश्वर को संसार में लड़ाई, झगड़े, युद्ध आदि का कारण बताया, किसी ने ईश्वर के बताये मार्ग पर चलना अर्थात धर्म के पालन करने को अफीम बता दिया, किसी ने आस्तिकता को धर्म के नाम पर होने वाले अन्धविश्वास की उत्पत्ति का कारण बताया । परन्तु सत्य क्या है? क्या वाकई में ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है और क्या नास्तिक लोगों की धारणा सत्य है। हम प्रश्न उत्तर शैली में इस विषय पर विचार रखेंगे।

1. आस्तिकता की परिभाषा क्या हैं?

समाधान- सामान्य रूप से हम आस्तिकता की यह परिभाषा समझते हैं कि मनुष्य का अपने से किसी उच्च अदृष्ट शक्ति पर विश्वास रखना आस्तिकता कहलाता हैं अर्थात् एक ऐसी शक्ति जो मनुष्य से अधिक शक्तिशाली हैं, समर्थ हैं उसमें विश्वास रखना आस्तिकता कहलाता हैं। परन्तु यह परिभाषा अपूर्ण हैं और इसे पढ़कर हमारे मन में अनेक शंकाएं आती हैं। एक आतंकवादी व्यक्ति अल्लाह या ईश्वर के नाम पर हिंसा करता हैं, निर्दोष लोगों के प्राणों का हरण करता है क्या इसे आप आस्तिकता कहेंगे? हमारे देश के इतिहास को उठाकर देखिये कि हमारे देश में अनेक हिन्दू-मुस्लिम दंगे धर्म के नाम पर हुए हैं। यहाँ तक कि देश का १९४७ में विभाजन भी धर्म के नाम पर हुआ था। क्या इससे हम यह निष्कर्ष निकाले कि आस्तिकता दंगों, उपद्रवों आदि को जन्म देती है। इसी प्रकार से यूरोप के इतिहास में क्रूसेड युद्धों का कारण ईसाई और मुस्लिम समाज का संघर्ष था, वह भी धर्म के नाम पर हुआ। हमारे चारों ओर हम देखें कि आस्तिकता के नाम पर अनेक अंधविश्वासों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हम क्या यह निष्कर्ष निकाले कि आस्तिकता समाज में अराजकता को जन्म देती है? क्या आस्तिकता के नाम पर हजारों निरीह प्राणियों की गर्दनों पर ईद के दिन छुरियाँ नहीं चलती हैं? इसे हम यह निष्कर्ष क्यों न निकाले कि आस्तिकता के कारण, ईश्वर के कारण संसार में प्राणियों को बिना कारण असमय मृत्यु को भोगना पड़ता है और इसका दोष ईश्वर को देना चाहिए।

यह शंका इसलिए उत्पन्न हुई क्योंकि हम आस्तिकता की परिभाषा को ठीक से नहीं समझ पाये। आस्तिकता की परिभाषा में धार्मिकता का समावेश नहीं हैं। आस्तिक विश्वास से प्रभावित होकर उत्तम कर्म करना धर्म कहलाता हैं अर्थात आस्तिकता के प्रभाव से मनुष्य उत्तम कर्म करे तभी वह आस्तिक हैं अन्यथा वह अंधविश्वासी हैं। अन्धविश्वास का मूल कारण अज्ञानता हैं एवं हिंसा, दंगे, उपद्रव आदि का मूल कारण स्वार्थ हैं।

2. क्या धर्म के कारण संसार में युद्ध, दंगे आदि नहीं हुए हैं? क्या धर्म अथवा आस्तिकता के कारण अन्धविश्वास को बढ़ावा नहीं मिलता? क्या धर्म अथवा आस्तिकता के कारण निरीह प्राणियों की बलि नहीं दी जाती?

समाधान- संसार में जितनी भी हिंसा, युद्ध, दंगे आदि हुए हैं इनका कारण धर्म नहीं अपितु मत अथवा मजहब की संकीर्णता हैं। हम जब धर्म के स्थान पर मत की मान्यताओं को अपना ध्येय समझ लेते हैं तब शांति के स्थान पर अशांति होती हैं, भ्रातृत्व के स्थान पर वैमनस्य को बढ़ावा मिलता है। पहले हमें धर्म की परिभाषा को समझना चाहिए। धर्म की परिभाषा क्या है?

१. धर्म संस्कृत भाषा का शब्द हैं जोकि धारण करने वाली धृ धातु से बना हैं। '**धार्यते इति धर्मः**' अर्थात जो धारण किया जाये वह धर्म हैं। अथवा लोक परलोक के सुखों की सिद्धि के हेतु सार्वजानिक पवित्र गुणों और कर्मों का धारण व सेवन करना धर्म हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं की मनुष्य जीवन को उच्च व पवित्र बनाने वाली ज्ञानानुकुल जो शुद्ध सार्वजानिक मर्यादा पद्धति है वह धर्म है।

२. जैमिनी मुनि के मीमांसा दर्शन के दूसरे सूत्र में धर्म का लक्षण है लोक परलोक के सुखों की सिद्धि के हेतु गुणों और कर्मों में प्रवृति की प्रेरणा धर्म का लक्षण कहलाता है।

३. वैदिक साहित्य में धर्म वस्तु के स्वाभाविक गुण तथा कर्त्तव्यों के अर्थों में भी आया है। जैसे जलाना और प्रकाश करना अग्नि का धर्म है और प्रजा का पालन और रक्षण राजा का धर्म है।

४. मनु स्मृति में धर्म की परिभाषा

धृतिः क्षमा दमोअस्तेयं शोचं इन्द्रिय निग्रहः धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणं। (मनुस्मृति ६/९)

अर्थात धैर्य,क्षमा, मन को प्राकृतिक प्रलोभनों में फँसने से रोकना, चोरी का त्याग, शौच अर्थात् पवित्रता, इन्द्रियों का निग्रह अर्थात उन्हें वश में करना, बुद्धि अथवा ज्ञान, विद्या, सत्य और अक्रोध ये धर्म के दस लक्षण हैं।

दूसरे स्थान पर कहा है **आचारःपरमो धर्म** १/१०८ अर्थात सदाचार परम धर्म है

५. महाभारत में भी लिखा हैं - **धारणाद धर्ममित्याहुः,धर्मो धार्यते प्रजाः** अर्थात जो धारण किया जाये और जिससे प्रजाएँ धारण की हुई हैं वह धर्म है।

६. वैशेषिक दर्शन के कर्ता महा मुनि कणाद ने धर्म का लक्षण यह किया है - **यतोअभयुद्य निश्रेयस सिद्धिः स धर्मः** अर्थात् जिससे अभ्युदय (लोकोन्नति) और निश्रेयस (मोक्ष) की सिद्धि होती है, वह धर्म है।

७. स्वामी दयानंद के अनुसार धर्म की परिभाषा - जो पक्षपात रहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार हैं उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत का अधर्म हैं।(-सत्यार्थ प्रकाश ३ सम्मुलास)। पक्षपात रहित न्याय आचरण सत्य भाषण आदि युक्त जो ईश्वर आज्ञा वेदों से अविरुद्ध हैं, उसको धर्म मानता हूँ। (-सत्यार्थ प्रकाश मंतव्य) इस काम में चाहे कितना भी दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य धर्म से पृथक कभी भी न होवें। (- सत्यार्थ प्रकाश) गंभीरता से चिंतन मनन करने पर धर्म का मूल उद्देश्य व्यक्ति को सत्याचरण के लिए प्रेरित करना है।

धर्म मनुष्य की उन्नति के लिए आवश्यक है अथवा बाधक है इसको जानने के लिए हमें धर्म और मजहब में अंतर को समझना पड़ेगा। यह धर्म के जिस विकृत रूप के कारण अन्धविश्वास, हिंसा अशांति, उपद्रव, दंगे आदि होते हैं उसे मजहब *या मतमतांतर कहना चाहिए।*

3. धर्म और मत/मजहब में अंतर *क्या है?*

यह समझने की आवश्यकता है। मज़हब अथवा मत-मतान्तर के अनेक अर्थ हैं। मत का अर्थ है वह रास्ता जो स्वर्ग और ईश्वर प्राप्ति का हैं जोकि उस मत अथवा मजहब के प्रवर्तक अर्थात चलाने वाले ने बताया हैं। एक और परिभाषा है कि कुछ विशेष मान्यताओं पर ईमान अथवा *विश्वास लाना* जो उस मत के चलाने वाले ने बताई है।

- शेष पष्ठ 6 पर

साईं बाबा का विरोध कितना सही-कितना गलत?

- डॉ. विवेक आर्य

साईं बाबा के नाम को सुर्खियों में लाने का श्रेय शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी को जाता है जिनका कहना है कि साईं बाबा की पूजा हिन्दू समाज को नहीं करनी चाहिए क्योंकि न साईं ईश्वर के अवतार हैं न ही साईं का हिन्दू धर्म से कुछ लेना देना है। साईं बाबा जन्म से मुस्लमान थे और मस्जिद में रहते थे एवं सबका मालिक एक है कहते थे। शंकराचार्य जी को कहना हैं की ओम साईं राम में राम के नाम साईं के नाम को साथ जोड़ना गलत है और जो राम का नाम लेते हैं वे साईं का नाम कदापि न लें, यह हिन्दू धर्म की मान्यताओं के विरुद्ध है। कुछ लोग शंकराचार्य जी की दलीलों को सही ठहरा रहे हैं क्योंकि साईं बाबा के नाम के साथ मुस्लमान शब्द का जुड़ा होना उनके लिए असहनीय है जबकि कुछ लोग जो अपने आपको साईं बाबा का भगत बताते हैं शंकराचार्य जी के विरोध में उनके पुतले फूंक रहे हैं।

हमें यह जानना आवश्यक है कि साईं बाबा का पिछले एक दशक में इतने अधिक प्रचलित होने के पीछे क्या कारण हैं? क्या कारण हैं कि एकाएक हिन्दू मंदिरों में साईं बाबा की मूर्ति सबसे बड़ी होने लगी और बाकी हिन्दू देवी देवता उसके समक्ष बौने दिखने लगे हैं? क्या कारण है कि प्रायः हर हिन्दू के घर में रामायण, गीता, भागवत आदि के स्थान पर साईं आरती के गुटके पढ़े जाते हैं? क्या कारण है कि राम और कृष्ण के नामों से अपने बच्चों का नामकरण करने वाले हिन्दू लोग साईं के नाम से अपने बच्चों को पुकारने में गर्व करने लगे हैं? उत्तर स्पष्ट है कि सामान्य जन साईं बाबा द्वारा चमत्कार करने, बिगड़े कार्य बनाने, अधूरे काम बनाने, व्यापार, नौकरी, संतान प्राप्ति, प्रेम सम्बन्ध आदि कार्यों में सफलता प्राप्ति करने हेतु करते हैं। अगर विस्तृत रूप से देखा जाये तो हिन्दू समाज में जितनी भी पूजा-उपासना की विधियाँ प्रचलित हैं उनका लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति नहीं अपितु जीवन में सफलता प्राप्ति अधिक है। जैसे कोई तीर्थों में ,कोई पहाडों में,कोई नदियों में, कोई जीवित गुरुओं के चरणों में या गुरु नाम में , कोई मृत गुरुओं के चित्र और वस्तुओं में, कोई पीरों में, कोई कब्रों में, कोई निर्मल बाबा के गोलगप्पों में, कोई व्रत कथाओं में, कोई हवनों में, कोई पुराणों के महात्म्य में, कोई निरीह पशुओं की बलि में, कोई आडम्बरों में, कोई गंडा-तावीज में सफलता की खोज कर रहा हैं। वैसे हिन्दुओं के समान मुस्लिम समाज भी मक्का मदीना से लेकर दरगाहों और कब्रों में तो ईसाई समाज भी प्रार्थना रूपी पूजा, ईसाई संतों के चमत्कारों में सफलता खोज रहा है।

सत्य यह हैं कि हिन्दू समाज की ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से अनभिज्ञता, चमत्कार को कर्म-फल व्यवस्था से अधिक महता , वेदादि शास्त्रों में वर्णित ईश्वर की पूजा करने सम्बन्धी अज्ञानता इस अव्यवस्था के लिए मुख्य रूप से दोषी हैं। खेद हैं कि शंकराचार्य जी भी इस समस्या का समाधान करने में विफल हैं क्योंकि उनके अनसार साईं के स्थान पर गंगा स्नान और राम नाम के स्मरण से ईश्वर की पूजा करनी चाहिए। जब तक सर्वव्यापक, अजन्मा, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान एवं निराकार ईश्वर की सत्ता में पूर्ण विश्वास नहीं होगा तब तक धर्म के नाम पर इसी प्रकार से पाखंड फैलते रहेंगे। जब तक मनुष्य को यह नहीं सिखाया जायेगा कि हम ईश्वर की उपासना इसलिए करते हैं ताकि अनादि ईश्वर के सत्यता, न्यायकारिता, निष्पक्षता, दयालुता जैसे गुण हमारे भी हो जाये तब तक मनुष्य इसी प्रकार से सफलता प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों में भटकता रहेगा। जब तक मनुष्य को यह नहीं सिखाया जायेगा कि जीवन का उद्देश्य आत्मिक उन्नति कर मोक्ष की प्राप्ति हैं तब तक मनुष्य अपने आपको भ्रम में रखकर दुःख भोगता रहेगा।

इसलिए केवल साईं बाबा का विरोध इस समस्या का समाधान नहीं है अपितु वेद विदित सत्य का प्रचार से ही इस समस्या का समाधान संभव है।

प्रथम पष्ठ का शेष

महाशय धर्मपाल जी सर्वसम्मति ....

प्रकाश वर्मा, कीर्ति शर्मा, मदन मोहन सलूजा, विक्रम नरुला, विद्यामित्र टुकराल, अजय सहगल, राजेन्द्र दर्गा, राजीव आर्य आदि प्रमुख थे।

तत्पश्चात् निर्वाचन अधिकारी ब्र. राजसिंह आर्य जी ने कहा कि यदि कोई और भी नाम हो तो प्रस्तुत करें। जिस पर कोई अन्य नाम प्रस्तुत नहीं हुआ। अत: निर्वाचन अधिकारी ब्र. राजसिंह आर्य जी द्वारा महाशय धर्मपाल जी को पुन: प्रधान चुने जाने की घोषणा की गई। श्री अरुण प्रकाश वर्मा, राजीव आर्य, सत्यानन्द आर्य, श्रीमती उषाकिरण आर्या, अजय सहगल, ललित चौधरी, अभिमन्यु चावला जी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया तथा सर्वसम्मति से शेष कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सभा गठित करने के अधिकार महाशय जी को प्रदान किए गए।

ब्र. राजसिंह जी ने महाशय धर्मपाल जी का संक्षिप्त परिचय, उनके सेवा कार्यों, आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार एवं दिल्ली सभा के अन्तर्गत अनेकानेक योजनाओं में उनके द्वारा प्रदान किए जा रहे सहयोग की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महाशय जी केवल आर्थिक सहयोग ही नहीं देते हैं अपितु उन संस्थाओं की निरन्तर प्रगति की जानकारी भी प्रतिदिन लेते रहते हैं। उनके जैसा निष्ठावान, कर्त्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी, परोपकारी, नौजवान कर्मठ कार्यकर्ता आर्यसमाज को मिलना कठिन है। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्ताव रखा कि ऐसे कर्मठ अधिकारी को हमें अधिकार देना चाहिए कि वे अपनी टीम का स्वयं गठन करें।

पुन: प्रधान निर्वाचित किए जाने पर महाशय धर्मपाल जी ने दिल्ली की सभी आर्यसमाजों से पधारे प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरा जीवन आर्यसमाज का है। मैंने अपने आपको उसी दिन आर्यसमाज को समर्पित कर दिया था, जब मेरे पिता महाशय चन्नीलाल जी मझे अंगली पकडकर आर्यसमाज में लेकर जाते थे। मुझे आर्यसमाज का कार्य करने की प्रेरणा एवं संस्कार उन्हीं से मिले। उन्होंने आगे कहा कि आप सब मुझे ऐसा आशीर्वाद दें कि मैं और भी अधिक गति के साथ आर्यसमाज का कार्य कर सकूं।

उन्होंने आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए 21लाख रुपये की राशि से महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. के नाम से स्थिर निधि बनाने की भी घोषणा की।

आर्य केन्द्रीय सभा के साधारण सभा अधिवेशन में गत अधिवेशन से अब तक हुए कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते महामन्त्री श्री राजीव आर्य जी। साथ में हैं प्रधान महाशय धर्मपाल जी, निर्वाचन अधिकारी ब्र. राजसिंह आर्य जी, दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, केन्द्रीय सभा के कोषाध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा एवं लेखा नीरिक्षक श्री अरुण आर्य जी

दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सदन को जानकारी देते हुए कहा - केरल के कालीकट में महाशय जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत लगभग 5 करोड़ रुपये की लागत से महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की जा रही है, जिसका शिलान्यास दिनांक 15 अगस्त को महाशय जी के कर-कमलों से होगा। जो सज्जन जाना चाहें वे अपनी रेल/हवाई टिकटें अभी से करा लेवें।श्री राजीव आर्य जी ने उपस्थित समस्त सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि महाशय जी हमें जो भी आदेश देंगे उसे हम शिरोधार्य करेंगे।

यात्रा वतान्त

डस्लामिक देश मलेशिया से एक चिट्ठी

- आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

अपनी आठवीं विदेश यात्रा के दूसरे चरण में सिंगापुर से ६ घंटे की बस यात्रा कर दोपहर २ बजे हम क्वालालामपुर पहुंचे। मलेशिया कोलकाता से 2600 किमी तथा सिंगापुर से 350 किमी। यह देश चीन सागर की मध्यस्थता में पूर्वी व पश्चिमी मलेशिया के रूप में विचित्र रूप से विभाजित है। पश्चिमी मलेशिया थाईलैंड की सीमा को स्पर्श करता है तो पूर्वी मलेशिया इंडोनेशिया व ब्रनेई को सिंगापुर को एक पुल व राजमार्ग से जोड़ लिया है तथैव वियतनाम व फिलिपिन्स की समुद्री सीमाएं भी निकटतम है। मलेशिया का क्षेत्रफल ३२९८४७ वर्ग किमी है जो आँध्रप्रदेश व पंजाब के संयुक्त क्षेत्रफल के बराबर है। इसमें १३ राज्य ३ संघ प्रदेश व ९७ जिले हैं। मलयाचल के निवासियों द्वारा बसाया गया होने से व सिंगापुर के कुछ वर्ष साथ रहने से इसका नाम मलेशिया हो गया। शताब्दियों से अत्रस्घ आदिवासी विकृत पौराणिक पूजा पद्धति को मानते रहे। 14वीं शताब्दी में इस्लाम की विचारधारा पहुंची। जोर जबरदस्ती व विवशता से ये उसके रंग में रंगते चले गए। १७वीं शताब्दी में पुर्तगलों का आक्रमण हुआ तो १८वीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने कुटिल नजर डाल दी। दितीय विश्व युद्ध में ३ वर्षों तक सिंगापुर सहित यहाँ पर भी जापान का कब्जा रहा पर पन: अंग्रेजों ने इसे जीत लिया। चीनी व भारतीय मजदूरों को अंग्रेजों ने यहाँ सप्लाई किया। उनकी ही पीढ़ी संपत्ति यहाँ की स्थाई निवासी बन गयी है। कुछ प्रदर्शनों व अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के चलते बिना किसी बलिदान के मलेशिया को ३१ अगस्त १९५७ को अंग्रेजों ने स्वतन्त्र कर दिया था। यह एक विकसित राष्ट्र है। जनसंख्या ३ करोड़ १८ लाख है। मूल निवासी मलय (मुस्लिम) ६२%, बौद्ध 20%, इसाई ९%, हिन्दू ७%, व अन्य २% हैं। 30 लाख प्रवासी कर्मचारी कई देशो से आकर सेवारत हैं। बर्मा, फिलिपिन्स, इंडोनेशिया आदि देशों से २ लाख से ज्यादा घुसपैठ होने से चोरी, लूट की घटनाएं यहाँ घटती रहती हैं। यहाँ की मुद्रा को टिंगित आर. एम. कहते हैं जो भारत के 20 रुपये के बराबर है। भारत से ढाई घंटे पूर्व यहाँ सूर्योदय होता है। राजा का चयन नौ राज्यों के पारंपरिक शासक करते हैं। नागरिकता मिलना अत्यंत कठिन है पर पर्यटन या नौकरी हेतु वीजा सरलता से मिल जाता है। यहां की दो राजधानी हैं क्वालालामपुर (विधायिका) पुत्राजया (कार्य पालिका)। भूमध्य रेखा पर होने से इसे वर्षा वन कहते हैं। लगभग पूरे वर्ष बारिश होती है। ठण्ड नहीं पड़ती उमस व आर्द्रता बनी रहती है। मुस्लिमों को अधिक संतान पैदा करने पर शिक्षा, चिकित्सा, धन आदि की सविधा मिलती है। ह्रदद कानन (शरीयत) दो विधान सभाओं ने पारित कर दिया है पर बौद्ध व हिन्दू विरोध कर रहे हैं क्योंकि आगे इससे अल्पसंख्यकों पर दबाव बढ़ेगा। मलेशिया तेल उत्पादन में विश्व का चौथा देश है अत: पेट्रोल 40/- व डीजल 35/-है पर कारें महँगी हैं।

यहाँ के लक्ष्मीनारायण मंदिर की व्यास पीठ से हमें वेद विषयक तीन प्रवचनों का सुअवसर प्राप्त हुआ। हमने वेदों की विषय वस्तु, १६ संस्कार व आदर्श मार्गदर्शकों के अनुकरण पर चर्चा की। हिन्दू जाति की वर्तमान समस्याओं हेतु संतानों को संस्कारित करने व वानप्रस्थ का सुझाव दिया। इसी मंच से सायं प्रख्यात पौराणिक विद्वान् श्री रमेश भाई ओझा जी (गुजरात) का प्रवचन हुआ। हमने सत्यार्थ प्रकाश सहित कुछ वैदिक साहित्य आपको भेंट किया। संस्कृत में वार्तालाप के दौरान जब हमें बताया कि आपके नगर पोरबंदर के अधिवक्ता बार कौंसिल में हम न्याय विषय पर वकीलों को व्याख्यान दे चुके हैं तो आपको सुखद आश्चर्य हुआ और आपने हमें अपने आश्रम में आमंत्रित किया। हमने भी पूर्व आपको होशंगाबाद गुरुकुल आमंत्रित किया। मंदिर के मुख्य पुरोहित प. दिनेश जी शास्त्री को योग दर्शन के प्रथम व दूसरा पाद का अध्यापन किया। व्यास भाष्य भी आवश्यक होने पर पढ़ाया। आपके छोटे प. जी व धर्मपत्नी भी कक्षा में बैठी। अपने शिष्य प्रिय पीयूष जी इंजीनियर के घर यज्ञ किया दम्पति व मित्रों को वैदिक धर्म की वृद्धि हेतु टिप्स दिए। मंदिर के पुस्तकालय हेतु बहुत सारी पुस्तकें भेंट कीं। मलेशिया के इयोनगर में १९४२ में आर्य समाज स्थापित हुआ था पर शाखा वृक्ष से दूर हो तो सूख जाती है। राजधानी से 200 किमी दूर हमने उनका पता लगाकर उन्हें सार्वदेशिक सभा से जुड़ने का आग्रह किया। १-२ नवम्बर को आयोजित सिंगापुर आर्य सम्मलेन में आमंत्रित किया। कुछ टिप्स दिए। आप मंदिर के पुनर्निर्माण का यत्न कर रहे हैं। फिजी के बाद ये दूसरा देश है जब हम अपने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मित्र श्री विनय आर्य जी को विदेशी आर्यों का संपर्क सूत्र देने को उद्यत हुए हैं। दर्शनीय स्थलों में के.एल. टावर (ऊंचाई 420 मीटर) ट्विन टॉवर (जुड़वा इमारतें) म्यूजियम जू में सी लॉयन द्वारा बास्केट बॉल खेलना, अन्य आज्ञा पालन, सैकड़ों जीव तितलियों, सापों व मधुमक्खी का संसार, 6डी मूवी में जंगल की सैर, कार्तिकेय जी की 140 फीट की प्रतिमा, गुफाएं, समुद्र तट, बौद्धों व हिन्दुओं के मंदिर, कुछ प्रसिद्ध मस्जिदें, सुल्तान अब्दुल समद भवन प्रमुख हैं । १९ मई को एयर एशिया के विमान से कोलकता व कनेक्टिंग फ्लाइट से दिल्ली व भोपाल पहुंचे।

- अन्तराष्टीय वैदिक मिशनरी

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का साधारण सभा अधिवेशन

अधिवेशन में प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते महाशय धर्मपाल जी. श्री सुरेन्द्र रैली जी. श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्री दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी।

दोनों हाथ उठाकर आर्य प्रतिनिधियों ने किया प्रधान पद के लिए महाशय धर्मपाल आर्य जी का नाम का अनमोदन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के सर्वसम्मति से पन: प्रधान बनने पर महाशय धर्मपाल जी को हार्दिक शभकामनाएँ

सर्वसम्मति से पन: प्रधान निर्वाचित होने पर अपनी शभकामनाएं देते सर्वश्री राजसिंह आर्य. अरुण आर्य. बलदेवराज आर्य. राजीव आर्य. शिव भगवान लाहौटी

श्रीमती कमलेश आर्या. श्रीमती श्रीबाला चौधरी. श्रीमती वीणा आर्या. सर्वश्री धर्मपाल आर्य. एस. पी. सिंह. प्रेम अरोडा. रामभरोसे साह. श्री भरारा जी एवं मकेश जी

COMMENTS ON THE PROPOSED AMENDMENT

RE-ENACTMENT OF JUVENILE JUSTICE

(CARE AND PROTECTION OF CHILDREN) ACT, 2014

✍ At the outset, in the very first place the most important element of the proposed bill is the scope of the proposed legislation which should be strictly confined to the children involved or part of juvenile justice delivery system. For example, juvenile in conflict with law (perpetrator of crime) as well as child in need of care and protection (juvenile victim of the crime) could both be part of juvenile justice system and requiring rehabilitation and restoration to family and re-integration in social mainstream. The proposed bill attempts to rope into the juvenile justice system all normal children of poor families and marginalized parents who seek better future for them through social intervention, public charity and philanthropy which is an infringement of one's constitutional right of control over one's child as is evident from the concept of child in need of care and protection in the proposed Bill.

✍ Repeal of existing J J (CPC) Act 2000 and re-enactment of the proposed bill is a welcome move but certainly not the repeal of WCIL Act 1956 which is a very well settled Law of the Land and deals with entirely different field of children spread across the Country covering thousands of institutions in almost all states of India affecting the lives of millions of women and children for over half a century.

Moreover, the new law should seek to further strengthen the Child welfare social non-Govt organizations and not to cripple them and reduce them to be slaves of the Govt. machinery how-so-ever obsolete and out-dated or ill-designed it may be. In every section of the proposed bill, the insertion of words "....established or run by the Govt. itself or through the NGOs....." proves sufficiently to this effect.

✍ Altering well established basic definitions of various terms and phrases used over decades in legal language would harmfully dent the original character of century old institutions which is unhealthy for overall social structure of the country. For example, any addition/deletion in the definition of 'orphan would render many well-established and highly reputed orphanages seize to be orphanages anymore. Definition of 'after care' is a clear interference in the life of an adult. Definition of CINOCAP in section 2 (j) (v)-(vi) are very general and vague and attempting to cover all children of weaker section of society whereas section 2 (j) (vii)-(ix) suggest that all school going children belonging to all sections of society being vulnerable are CINOCAPS.

✍ Alleged JICWL is dealt with differently than JICWL and is thereby allowed to be kept with CINOCAP which is a major contradiction in itself.

✍ u/s 3 (2) :A person having committed a crime when juvenile but arrested post-18yrs of age is allowed to be placed along with other juveniles and not with adult criminals in jail which can be dangerous and wrong influence on other juveniles. That shouldn't be allowed to happen even if punishment can remain as for a juvenile.

✍ u/s 4 (i) it would be ridiculous to presume a child to be innocent of any criminal intent upto the age of 18yrs. The 'Nirbhaya' episode and almost daily reported cases of heinous crimes like rapes, murders and robbery by under-18s amply confirm that it would be a mockery of justice.

✍ It is strongly suggested to reduce the age of JICWL accused of having committed heinous crime from 18yrs to 16yrs.

✍ Unrestricted absolute powers stipulated to be conferred on (Child Welfare Committee)CWCs are most likely, rather certain to weed corruption in society. CWCs would become a minting machine extracting money from NGOs. CWC and (Child protection Unit) CPU are duplication of each other with no clear demarcation of roles.

✍ Norms of selection and appointment of members of CWC should be further tightened and a member must have at least 10 years practical experience of handling minimum 500 children. More responsible, honest, unbiased persons of eminence must be appointed to such sensitive positions.

✍ The provisions of imposing on an institution any particular type or a prescribed manner of management is usurpation of its Institutional Autonomy and independence granted by the Constitution of India. Further, taking over democratically elected management of a society or institution by the state govt. or any authority to handover the management of lawfully established institution to any other NGO or power to order closure of a running institution can be grossly abused as highly subjective and vindictive and is absolutely unconstitutional, illegal and draconian, liable to threaten the very existence of civil society initiative in social development. It deserves to be removed in toto from the bill forthwith to avoid withdrawal of all meaningful social interventions from across the Country by public charity organizations and individual philanthropy. This smacks of evil intentions of grabbing flourishing and resourceful institutions. The newly inserted penalty clauses on voluntary institutions are harsh and vindictive and shall severally discourage civil society to take social initiative.

✍ The children voluntarily admitted by poor parents, kins, natural guardians in an institution for better education, value based upbringing, conducive environment for all round development and career building without relinquishing their control over the children not worrying about resources for such high aspirations and these institutions without charge catering in charity to such children who do not require restoration, re-integration and rehabilitation and as such not open for adoption or foster care or after care, should be in no way covered by any provision of JJA and must exclusively and expressly be kept out of purview of the proposed act.

✍ On the whole, the draft seems to an exercise undertaken in haste without wide public debate or discussion and extensive consultations with states that it deserves as a massive legislation covering the whole Country and affecting millions of children and women. Some of the new amendments dealt with herein above seem to have been included at the behest of the coterie of few foreign funded NGOs, whose ulterior motive of operation is to systematically root out the traditional Indian ethos from the families and set in the western culture and European concept of child care with dubious foreign aid.

✍ The present Govt. in place in India is expected to be wise and vigilant enough to guard the Country against such sinister plans.

- Nitinjya Chaudhry

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वर की आवश्यकता
आर्य कन्या, ब्राह्मण गौत्र पाराशर 25 वर्ष, 5'5'' वजन 50 किलो, रंग गोरा, सुन्दर सुशील, एम.सी.ए., एम.एन.सी. में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद का कार्यानुभव पिता हरियाणा राज्य विभाग में लेखाधिकारी, माता बी.ए.बी.एड. घरेलू, भाई बी. टेक (अन्तिम वर्ष) हेतु सुयोग्य, सुन्दर सुशील, कार्य नियुक्त, आर्य वर चाहिए। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें
दिनेश कुमार आर्य, फरीदाबाद शहर
मो. 09968288806. 9868884665
Email : aryadk2013@yahoo.in

ईश्वर भक्ति से मिलती है दुखों से मुक्ति – अग्निमित्र शास्त्री

ईश्वर की भक्ति त्रिविध दुखों से मुक्ति दिलाती है। आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तीन प्रकार से मिलने वाले दुखों को दूर करने का एकमात्र उपाय ईश्वर की शरण में जाना है। उक्त विचार आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने 23 जून, 2014 को आर्य समाज विज्ञाननगर में आयोजित वैदिक आध्यात्मिक सत्संग में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि इन तीनों प्रकार के दुखों से बचने के लिए शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों परुषार्थों को करने के लिए कहा गया है।

इस अवसर पर आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति को परिवार समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बोध होना चाहिए। साथ ही उसी अनुरूप कार्य करने चाहिए।

आर्य विद्वान डॉ. के एल दिवाकर ने कहा कि व्यक्ति को केवल अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं होना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी संतुष्टि माननी चाहिए।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज को संगठित करने में अनुभवी लोगों के निर्देशन में युवाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इसय अवसर पर विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस दुबे ने प्रभु भक्ति का भजन सनाया।

– राकेश चड्ढा, मन्त्री

महान वीरांगना लक्ष्मीबाई से युवा प्रेरणा ले

शहीद स्मृति चेतना समिति की ओर से महारानी लक्ष्मीबाई के 156वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज सरस्वती विहार में समाजसेवी राम निवास गुप्ता की अध्यक्षता में "वीर रस कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। पूर्व विभायक जय भगवान अग्रवाल ने युवाओं को महान वीरांगना लक्ष्मीबाई के बलिदान से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

शहीद सुखदेव के भतीजे अनिल थापर, साहित्यकार रविचन्द गुप्ता ने देशभक्तों का सही मूल्यांकन न होने पर क्षोभ व्यक्त करते हुए, शहीदों की जीवनी पाठ्यक्रम में शामिल करने, व उन्हे उचित सम्मान देने की मांग की।

हिन्दी अकादमी की ओर से आयोजित कवि सम्मेलन में प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, राजेन्द्र राजा, सत्येन्द्र सत्यार्थी, युसुफ भारद्वाज, प्रेम शुक्ल, वीरेन्द्र कुमार, तिलक राज चावला आदि वीर-रस कवियों, अशोक अग्रवाल, सूर्यप्रकाश पाण्डेय, सुरेश गुप्ता ने महान वीरांगना, मर्दानी लक्ष्मीबाई को श्रद्धांजलि दी। शहीद चित्र-प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभाशाली छात्रों को पुरस्कृत किया गया। मंच संचालन, देवीदत्त "सजल" ने किया। कार्यक्रम की व्यवस्था महेश चन्द्र शर्मा ने की। **–चन्द्रमोहन आर्य**

गुरुकुल कांगड़ी में 11 दिवसीय आधुनिक प्रयोगात्मक प्रशिक्षण

'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी के तीन सूत्र प्रेम से रहो,सत्य बोलो तथा विनम्रता का पालन करो का निरन्तर अनुपालन करने से ही प्रगति हो रही है तभी हर क्षेत्र में विश्वविद्यालय सफल है।' ये उद्‌गार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के बी.फार्मा विभाग द्वारा आयोजित 11 दिवसीय 'आधुनिक प्रयोगात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम' के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महर्षि दयानन्द विश्वद्यालय रोहतक के कुलपति प्रो.एच.एस.चहल ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मनुष्य को नित नए अनुसंधान करते रहने चाहिए और इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को करते रहना चाहिए। प्रो.चहल ने कहा कि जीवन एक संघर्ष का नाम है जिसमें असफलताएं भी आती हैं ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में कुलपति प्रो.सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि 'विद्या दानं महत्दानं' अर्थात् विद्या का दान ही महान दान है। गुरुकुल द्वारा आयोजित यह प्रशिक्षण कार्यक्रम इसी प्रकार के दान के अंतर्गत आता है। दवाइयां बनाने वाली मशीनों का कैसे प्रयोग किया जाए यही इस कार्यक्रम में बताया जाएगा। उन्होंने कहा कि दवाइयों का प्रयोग पहले प्राचीन काल में भी होता था तब ऋषिगण अपने अनुभवों से उन दवाइयों की मात्रा का निर्णय करते थे, आधुनिक काल में अनुभवों के स्थान पर मशीनें आ गई हैं जिनका प्रयोग किस प्रकार हो यह आना जरूरी है। आज मनुष्य अपनी बुद्धि के स्थान पर यंत्रों की गतिविधि पर आश्रित होता जा रहा है। इसलिए भी यह प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

बी.फार्मा संकाय के अध्यक्ष प्रो.आर. सी.दुबे ने अतिथियों का स्वागत किया ।

संयोजक डा.विपिन कुमार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का परिचय दिया तथा बताया कि आधुनिक उपकरणों द्वारा दवाइयों का निर्माण संतुलित तथा श्रेष्ठ कैसे हो. यह बताया जाएगा ।

प्रो.डी.के.माहेश्वरी ने कहा कि यदि एक भी यंत्र पर व्यक्ति को दक्षता हासिल हो जाए तो व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में जाकर अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर सकता है।

– डॉ.प्रदीप कुमार जोशी, पी.आर.ओ.

आर्यसमाज साकेत द्वारा आर्यसमाज नागालैण्ड का सहयोग

गत दिनों अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संरक्षित आर्यसमाज दीमापुर (नागालैंड) का पुनर्गठन किया गया। पिछले वर्ष आर्यसमाज साकेत, दिल्ली के यशस्वी प्रधान श्री पी.एस. डबास आर्ष गुरुकुलम् के उद्‌घाटन समारोह में डिमा हसाओं, असम पधारे थे और यहीं पर आर्यसमाज दीमापुर के कार्यों से प्रभावित होकर सहयोग करने का आश्वासन दिया था। इस हेतु समाज साकेत की ओर से लैपटाप हेतु 31000/- रुपये की राशि आर्यसमाज दीमापुर को भेंट की गई। यह बीजराशि भविष्य में नागालैण्ड में आर्यसमाज के लिए वरदान सिद्ध होगी।

ज्ञातव्य है कि एक समय था जब नागालैण्ड पूर्ण हिन्दू राज्य था। किन्तु अब उपेक्षा के कारण 90 प्रतिशत जनता ईसाई में धर्मान्तरित हो चुकी है। यहाँ पर भारत सरकार के समान नागालिम सरकार भी चल रही है। यहाँ पर यज्ञ का पजापाट करना आपत्ति मोल लेना है।

– संतोष कुमार शास्त्री, मंत्री

सत्यार्थ प्रकाश कक्षाएं सम्पन्न

आर्यसमाज गोविन्दपुरी में 2 से 7 जून तक सत्यार्थ प्रकाश के पाठन की विशेष कक्षायें आचार्य श्री इन्द्रदेव जी, अभिष्ठाता वेद-प्रचार मण्डल पश्चिमी दिल्ली के द्वारा आयोजित की गई। प्रतिदिन 35-40 पुरुष/महिलाओं ने भाग लिया। यह कार्य स्त्री समाज के सहयोग से सम्पन्न हुआ। *– सरोज सदन, प्रचार मन्त्री*

प्रवेश प्रारम्भ

राजस्थान का सुप्रसिद्ध संस्कार व सदाचार युक्त शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ है। यहां विद्यालय एवं छात्रावास का कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। यहां के विशाल एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त भवनों में प्रदूषित वातावरण से दूर आपका बालक प्राचीन गुरुकुल आश्रम परम्परा के अन्तर्गत पवित्र व सदाचारी शिक्षा के साथ सही अर्थों में संस्कारों एवं अनुशासित बनना सीखता है। कक्षा 9,10,11,12 तथा शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाएं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विवि वाराणसी द्वारा दिलाने की उत्तम व्यवस्था। विस्तत जानकारी के लिए सम्पर्क करें –

प्राचार्य श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़
राजस्थान, बड़ी लाईन के पास,
रेलवे कालोनी, चित्तौड़गढ़ (राज.)
मो. – 09414396017

योग साधना एवं वैदिक संस्कार शिविर सम्पन्न

आर्य समाज साकेत स्कूली छात्रों के लिए 'योग साधना एवं वैदिक संस्कार शिविर 29 मई से 5 जून 2014 तक गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम कोटद्वार में आयोजित किया गया। शिविर में 8वीं से 12वीं कक्षा तक के 45 छात्रों ने भाग लिया। इस शिविर के दौरान छात्रों को गुरुकुलीय दिनचर्या का पालन करवाते हुए संध्या, हवन, आसन, प्राणायाम के साथ-साथ वैदिक चिंतन की सघन शिक्षा दी गई। आठ दिन के इस शिविर में बौद्धिक शिक्षण का दायित्व प्रो. पूर्ण सिंह डबास, आचार्य वीरेन्द्र कुमार तथा श्री मंजीत कुमार शास्त्री ने संभाला। शिविर की प्रबंध व्यवस्था में श्री बलराज सेजवाल, श्री मंजीत शास्त्री तथा श्री राजेन्द्र सिंह ध नखड़ ने की। गुरुकुल कण्वाश्रम के आचार्य डॉ. विश्वपाल जयंत का भी भरपूर सहयोग मिला। *– प्रमिला नैयर, मंत्री*

वर की आवश्यकता

45 वर्षिय, सुन्दर, श्वेता वर्ण, होनहार, शाकाहारी, युवती के लिए वर की आवश्यकता है। 13 वर्ष पहले शादी हुई थी पर Consummate नहीं हुई, युवती अपनी विधवा माता की सेवा में है।

युवती Electronics Engineering में Diploma, Central Govt Job में चडीगढ़ में कार्यरत है 40000 के करीब मासिक वेतन है। Pensionable Job, कार इत्यादि सब सुविधाएं हैं। सम्पर्क करें-9217970381. 0172-2662870

वधू चाहिए

हैदराबाद के हैटेकसिटी में कार्यरत, 33 वर्षीय अपंग साफ्टवेयर इंजिनियर को, 26 से 27 वर्षीय 12वीं या स्नातक तक शिक्षित, वैदिक संस्कृति-संस्कार युक्त, एवं शुद्ध शाकाहारी वधू चाहिए। जात-पात का कोई बन्धन नहीं। संपर्क:- 08142772392. 09885667682

आर्य वधू चाहिए

त्यागी ब्राह्मण, भारद्वाज गौत्र, 31 वर्ष, 5'11'', 72 किलो, गोरा, सुन्दर, एम.सी.ए., सांडियागो अमेरिका में वरिष्ट सोफ्टवेयर इंजीनियर वेतन 101000 डॉलर वार्षिक, एक बड़ा भाई विवाहित, पिता सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी, माता गृहिणी, दिल्ली में स्थाई निवास, हेतु गोरी, सुन्दर, लम्बी, प्रो. योग्यता प्राप्त, शाकाहारी, आर्य कन्या चाहिए। कोई जाति बन्धन नहीं। इच्छक आर्य परिवार सम्पर्क करें-
ईमेल : seelenheil0@gmail.com

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

116वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज रामपुरा कोटा का 116वां वार्षिकोत्सव 6 से 15 जून तक मनाया गया। 10 दिवसीय कार्यक्रम में इस बार 9 कार्यक्रम गाँवों में रखे गए तथा महर्षि दयानन्द एवं वेद वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का एक ऐतिहासिक कार्य किया गया। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह एवं श्री लेखराज शर्मा ने भजनों एवं उपदेशक के माध्यम से गाँव में प्रचलित कुरीतियों पर प्रहार किया, ईश्वर का स्वरुप एवं धर्म के ऊपर बताया। महिलाओं पर ऋषि का उपकार बताया एवं जाति-पाँत छुआ-छूत एवं शूद्र की विवेचना का सटीक उदाहरण प्रस्तुत किये तथा गाँव वालों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी गाँवों से महिला व पुरुष, नौजवान अच्छी संख्या में उपस्थित हए। **– हरिदत्त शर्मा, प्रधान**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 30 जून, 2014 से रविवार 6 जुलाई, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2012-13-14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3/4 जलाई, 2014

पर्व भगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 य0(सी0) 139/2012-14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बधवार 2 जलाई, 2014

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्टीय शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा में 1 से 8 जून तक सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का 13वां राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में लगभग 100 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

शिविर में शिविरार्थिणियों को स्वांग सुन्दर, सूर्यनमस्कार, भूमि नमस्कार, आसन, लाठी, छूरी, रायफल शूटिंग, निगुद्धम्, सैनिक शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, आदि का प्रशिक्षण दिया गया। सार्वदेशिक वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी उत्तमा यतिजी के नेतृत्व में व्यायाम शिक्षक सत्यम् जी व अभिलाषा जी (जयपुर) एवं कु. नेहा व कु. ऋतांशी (नई दिल्ली) प्रशिक्षण देने हेतु उपस्थित रहे। अतिथि प्रशिक्षक के रूप में प्रा. भावेश जेतपरिया ने मनोविज्ञान व डॉ. जयंति लाल जीवाणी ने आरोग्य विज्ञान का प्रशिक्षण दिया।

शिविर का उद्घाटन प्रा.दयालमुनि आर्य(वेदों के गुजराती अनुवादक) ने ध्वज फहराकर किया। दीक्षांत समारोह राजकोट के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जयदेव जी आर्य की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। जिसके मुख्य अतिथि श्री रणजीत सिंह परमार (उपप्रधान गुजरात राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा) थे। दीक्षांत समारोह में जामनगर, राजकोट, गोंडल, गांधीधाम, वडोदरा, सुरेन्द्रनगर, मोरबी आदि स्थानों से आर्यसमाज के पदाधिकारी व टंकारा के सरपंच धर्मेन्द्र त्रिवेदी व स्थानीय जन शामिल हुए और वीरांगनाओं को प्रोत्साहित किया। - **संचालिका**

पष्ठ 2 का शेष

वेद मन्त्र भावार्थ

पृथिवी का व्यास वर्तमान व्यास से दुगुना हो जाये तो गुरूत्वाकर्षण शक्ति के दुगुना होने से वायुमण्डल की ऊँचाई खतरनाक रूप से घट जायेगी व उसका दबाव भी बढ़ जायेगा जिसका जीवन पर गम्भीर घातक असर पड़ेगा। सर्दी वाले क्षेत्र बहुत बढ़ जायेंगे। मानव समुदाय के विभिन्न वर्ग अलग-थलग पड़ जायेंगे और यात्रा करना या संचार साधनों का प्रयोग करना सर्वथा कठिन व लगभग असम्भव हो जायेगा ऐसा बताते हैं।

(ञ) यदि पृथिवी का आकार सूर्य जितना बड़ा हो जाय व घनता ज्यों की त्यों रहे तो इसकी गुरूता 150 गुनी बढ़ जायेगी। वायुमण्डल की ऊँचाई घटकर केवल 4 मील रह जायेगी। पानी का भाप बनकर उड़ना असम्भव हो जायेगा। मानवों का आकार इतना छोटा हो जायेगा जैसे गिलहरी का ऐसा बताया जाता है।

(ट) पृथिवी व सूर्य के बीच की दूरी भी ईश्वर द्वारा निर्धारित है। यदि सूर्य की दूरी वर्तमान दूरी से दुगुनी हो जाये तो सर्दियों के मौसम लम्बाई में दुगुने हो जायेंगे। सब प्राणी ठण्ड के मारे मर जायेंगे। यदि सूर्य की दूरी वर्तमान दूरी से आधी होवे तो गर्मी के मौसम लम्बाई में चौगुने हो जायेंगे व सब प्राणी जल-भन जायेंगे. ऐसा बतलाते हैं।

-: संकल्प व संपादन:-
स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक (उपाध्याय)
दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा.-सागपुर,
जि.-साबरकांठा (गजरात)- 383307

प्रतिष्ठा में.

वैदिक धर्म अपनाया

श्री समीर बाबु भाई (सूरत) ने स्वेच्छा से इस्लाम त्यागकर सत्य सनातन वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया। शुद्धि संस्कार 29 मई को आर्य समाज बड़ौदा में पुरोहित श्री नारायण प्रसाद मिश्रा जी ने कराया। शुद्धि के उपरान्त उन्हें सुमेर नाम दिया गया। इस अवसर पर सुमेर के चार मित्रों, सहयोगियों ने भी भाग लिया। श्री सुमेर इंजीनियरिंग कालिज में आचार्य हैं। ज्ञातव्य है कि श्री सुमेर ने जिलाधीश बड़ौदा से इस हेतु निवेदन किया था, जिस पर जिलाधीश ने आदेश धर्म परिवर्तन वशी 9089/94 दिनांक- 29/04/2014 में इसकी स्वीकृति प्रदान की। - ***कष्ण कमार, प्रधान***

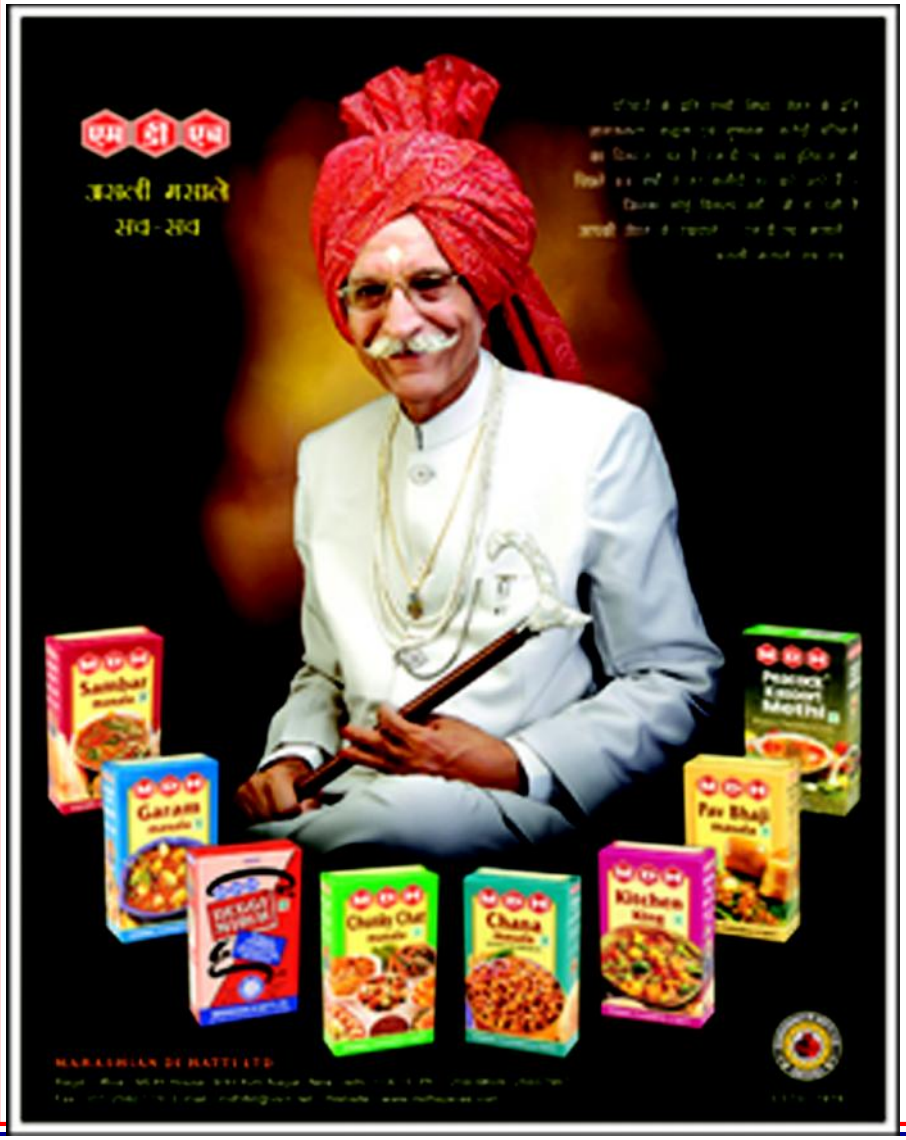

सम्पादक, मदक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2 नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनमान रोड, नई दिल्ली-1: टैलीफैक्स : 23360150 : 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह